

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं : एक विवेचना

*ललित कुमार पंवार

शोध सारांश

राजस्थान का नाम आते ही 'रंग-रंगीलो राजस्थान' की छवि पर्यटकों मन में उभर आती है। राजस्थान की प्राचीन लोक संस्कृति और जीवन शैली पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकृषित कर लेती है। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में जो लोक संस्कृति के रंग बिखरे पड़े हैं उन्हें नजदीक से देखने और ग्रामीण शैली का आनंद उठाने के लिए पर्यटक आज ग्रामीण पर्यटन स्थलों की ओर अधिक आकृष्ट हो रहे हैं। राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं अतः यदि समुचित प्रयास किये जाये तो राजस्थान का ग्रामीण पर्यटन उद्योग नई ऊँचाईयां छू सकता है। प्रस्तुत लेख में राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाओं का विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

परिचय

राजस्थान का एक गौरवशाली इतिहास रहा है और राज्य की ग्रामीण संस्कृति की देश ही नहीं विश्व में एक विशेष पहचान है। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में यद्यपि पिछले कुछ दशकों में तेजी से सामाजिक बदलाव हुआ है लेकिन फिर भी लोग आज भी अपनी संस्कृति से जुड़े हुए हैं और अपनी प्राचीन परम्पराओं का पालन कर रहे हैं। भारत का ग्रामीण जीवन विदेशियों के लिए एक विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है। आज विदेशी मेहमान ग्रामीण क्षेत्रों में दो-तीन का प्रवास कर ग्रामीण जीवन का आनंद उठा रहे हैं। राजस्थान का ग्रामीणों की जीवन-शैली, उनका रहन-सहन, खानपान, वेशभूषा बहुत आकर्षक होने के कारण आज पर्यटक कुछ समय के लिए ग्रामीण जीवन का आनंद उठाने ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटक के रूप में ठहरने लगे हैं।

भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन को परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया – “कोई भी ऐसा पर्यटन, जो ग्रामीण जीवनए कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्शाता हो, जिससे स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ पहुँचता हो, साथ ही पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव के अधिक समृद्ध बनने की सम्भावना हो, तो उसे 'ग्रामीण पर्यटन' कहा जा सकता है।”

ग्रामीण पर्यटन की सबसे पहली अनिवार्यतः यह है कि यह गतिविधि आवश्यक रूप से केवल ग्रामीण इलाकों में ही संचालित होती है। ग्रामीण पर्यटन बहु-आयामी है, जिसमें कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, साहसिक पर्यटन और पर्यावरण पर्यटन शामिल हैं। ग्रामीण पर्यटन परम्परागत पर्यटन के बिल्कुल विपरीत होता है। ग्रामीण पर्यटन की कुछ खास विशेषताएँ हैं। ग्रामीण पर्यटक स्थलों के आसपास कम आबादी क्षेत्र होता है तथा पर्यटक पर्यावरण और प्राकृतिक वातावरण के अधिक नजदीक होता है। ग्रामीण पर्यटन के द्वारा पर्यटक ग्रामीण कला और संस्कृति, उनका रहन-सहन, त्यौहार, लोक-कला और जीवन को नजदीक से देख और समझ सकता है। शहर की भाग-दौड़ भरी जिंदगी जहाँ ठीक से सांस लेना भी दूभर होता है, पर्यटक ग्रामीण पर्यटन के दौरान न केवल खुली हवा में सांस ले सकता है वह कुछ दिन प्रकृति के सानिध्य में रह कर मानसिक शांति भी प्राप्त कर सकता है।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं

राजस्थान सांस्कृतिक रूप से प्राचीनकाल से एक समृद्धशाली राज्य माना जाता है और राजस्थान की संस्कृति ने पूरे

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं : एक विवेचना

ललित कुमार पंवार

विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। पर्यटन के क्षेत्र में राजस्थान को 'रंग रंगीलो' राजस्थान के नाम भी जाना जाता है। राजस्थान शिल्पकला, हस्तकला, संगीत, मेले, त्यौहारों की एक समृद्धशाली परम्परा मौजूद है। राजस्थान की इस सांस्कृतिक विरासत को जानने और नजदीक से देखने के लिए प्रतिवर्ष हजारों देशी-विदेशी मेहमानों राजस्थान आते हैं। विशेषरूप से राजस्थान की ग्रामीण लोक-संस्कृति पर्यटन की दृष्टि से विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान बना चुकी है। आज देशी पर्यटकों के साथ-साथ बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक राजस्थान की संस्कृति को देखने के लिए यहां पर्यटक के रूप में आ रहे हैं।

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण, जीव-विज्ञान और भू-गर्भ विज्ञान की दृष्टि से कई स्थान हैं जो आज विश्व के शोध और अनुसंधानकर्ताओं के विशेष आकर्षण का केन्द्र बन चुके हैं। पश्चिमी राजस्थान के थार मरुस्थल की जैव विविधता, डेजर्ट पार्क, पारिस्थितिकी, हजारों वर्ष पूर्व के जीवाश्म, आदिकालीन चट्टानें आदि ने विश्व भर से शोध में रुचि रखने वाले लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है।

राजस्थान में आरंभ में राजपूत शासकों का शासन रहा है। रियासतकालीन राजस्थान के राजपूत शासक स्थापत्य एवं कला प्रेमी रहे थे। उन्होंने स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कई निर्माण कार्य करवाये। एकीकरण से पूर्व राजस्थान कई छोटी-छोटी रियासतों में बंटा हुआ था जिसके कारण राजस्थान के हर हिस्से में प्राचीन स्थापत्य के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। सरकार द्वारा ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्रामीण क्षेत्रों में प्राचीन दुर्ग और हेरिटेज भवनों को होटल के रूप में विकसित करने हेतु लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में उपेक्षित स्थापत्य कला परिपूर्ण इन प्रासादों को हेरिटेज होटल के रूप में विकसित करने के लिए निजि क्षेत्र के लोगों को विशेष रियायत दी जा रही है। सरकार प्रयासों के कारण ही आज ग्रामीण क्षेत्रों में कई वर्षों से उपेक्षित पड़े प्राचीन महल और भवन होटल के रूप में विकसित हो चुके हैं। यहां ठहरने वाले देशी-विदेश पर्यटक आसपास के ग्रामीण परिवेश का भरपूर आनंद उठा रहे हैं।

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में जो झोपड़ीनुमा बसावट जिसके द्वार पर परम्परागत रूप से गोबर से लीपना करके उस पर प्राचीन मांडने मांडे जाते हैं वे पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। राजस्थान की परम्परागत वेशभूषा भी पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण को केन्द्र हैं वे ग्रामीण पर्यटन के दौरान राजस्थानी वेशभूषा पहन कर यहां की संस्कृति के रंग में सरोबार हो जाते हैं।

राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में लोक संस्कृति के रंग बिखरे पड़े हैं फिर वह चाहे लोक संगीत हो, लोक नृत्य हो, मेले-त्यौहार हो या फिर अलमस्त जीवन शैली। आज राजस्थान में ग्रामीण क्षेत्रों में कई ऐसे स्थान पर्यटन की दृष्टि से विकसित हो चुके हैं जहां पर्यटक कुछ दिन वहां रह कर ग्रामीण जीवन शैली और यहां कि ग्रामीण संस्कृति का आनंद उठा रहे हैं। यदि राजस्थान की ग्रामीण संस्कृति के इन रंगों को पर्यटन की दृष्टि से उभारा जाये तो इससे न केवल राज्य की आर्थिक स्थिति मजबूत होती वरन् ग्रामीण क्षेत्रों में न केवल आधारभूत संरचना का विकास होगा वहां के लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार होगा।

ग्रामीण पर्यटन से लाभ

ग्रामीण क्षेत्रों का विकास

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने का सबसे बड़ा लाभ ग्रामीण क्षेत्रों का विकास है। पर्यटन के अवसर बढ़ाने के लिए सबसे पहला कदम ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए सड़कों और आवागमन के साधनों का विस्तार करना है। अतः पर्यटन की संभावनाएँ बढ़ने के साथ-साथ सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के विकास और आधारभूत संरचना पर विशेष ध्यान देने लगी है। राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावना होने के कारण राज्य सरकारें अपनी पर्यटन नीति में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों के विकास पर विशेष बल देने लगी है।

ग्रामीणों को रोजगार

पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं है यही कारण है कि केन्द्र और राज्य सरकारें पर्यटन के क्षेत्र को रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण साधन मानती है। ग्रामीण पर्यटन के प्रति पर्यटकों की बढ़ती रुचि को देखते हुए सभी स्तर पर ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास किये जा रहे हैं ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को उनके

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं : एक विवेचना

ललित कुमार पंवार

स्थान पर रोजगार के अवसर मिल सके और उन्हें पलायन के लिए मजबूर नहीं होना पड़े।

सामाजिक-आर्थिक स्तर में सुधार

ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन से ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोगों के सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है। आय बढ़ने से लोगों के जीवन-स्तर में तेजी से सुधार देखा जा रहा है।

पलायन में कमी

ग्रामीण क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने से स्थानीय लोगों को अपने क्षेत्र में ही रोजगार के अवसर मिल जाते हैं जिनसे उनको शहरों तरफ पलायन नहीं करना पड़ता है। पलायन में कमी होने से दोहरा लाभ होता है, पहला तो शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव नहीं बढ़ता है और दूसरी ओर अपने स्थान पर रह कर पर्यटन के साथ-साथ अपने परम्परागत कार्य जैसे कृषि, कुटीर उद्योग आदि का कार्य भी कर सकता है।

उपसंहार

राजस्थान आज विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। राजस्थान में जो स्थान पर्यटन स्थल विकसित हो चुके हैं वे अधिकांश शहरी क्षेत्र की हैं लेकिन राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएं उपलब्ध हैं। राजस्थान की ग्रामीण क्षेत्रों की लोक संस्कृति, मेले-त्यौहार, नृत्य, संगीत, वेशभूषा सभी पर्यटकों के लिए आज भी आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। राजस्थान में आने वाले पर्यटकों की ग्रामीण पर्यटन में रुचि लगातार बढ़ती जा रही है। यहां आने वाले पर्यटक शहर की बजाए आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में बने हेरिटेज होटलों, प्रासादों आदि में ठहरना अधिक पसंद करते हैं ताकि वे राजस्थान की ग्रामीण संस्कृति को अधिक नजदीक से देख सकें। आज आवश्यकता है कि राजस्थान के हर हिस्से उपेक्षित पड़े प्राचीन धरोहरों को संरक्षित और विकसित करने की जिससे ग्रामीण पर्यटन को और अधिक गति मिल सके।

***सहायक आचार्य**
इतिहास विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. तिवारी, शिव प्रसाद, (1986), विश्व पर्यटन और यात्रा उद्योग।
2. राजेश व्यास, "पर्यटन – उद्भव एवं विकास, राजस्थानी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
3. ललित के पंवार, भारतीय रेगिस्तान में पर्यावरणीय पर्यटन।
4. वी.के.वशिष्ठ एवं अन्य, कल्चरल हेरिटेज ऑफ राजस्थान
5. मोहनलाल गुप्ता, राजस्थान, जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन।
6. के.के. दीक्षित एवं जे.पी. गुप्ता, पर्यटन के विविध आयाम।
7. सुजस, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान, जयपुर, (2010-11), यूनिवर्सल प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर।
8. शर्मा, देवदत्त, राजस्थान का माटी शिल्प, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ कला अकादमी, (2013)।

राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं : एक विवेचना

ललित कुमार पंवार